

तेरे नैरूप मन को माये मैं मुझे चरणों में ठिकाना चाहिए ॥२॥

१ पहला रूप शैलपुत्री माता - दूसरा रूप डूंगर चरणी माता, अपने द्वार - खोलना चाहिए ॥२॥

मुझे चरणों में - तेरे नैरूप मन को - मुझे चरणों में -

२ तीसरा चन्द्रवन्ध्या माता - चौथा रूप कुलमाया माता, मैं को त्याग से बुलाना चाहिए ॥२॥

मुझे चरणों में - तेरे नैरूप मन को - मुझे चरणों में -

३ पाँचवा रूप स्कन्द माता - छठा रूप कोत्यायनी माता, दिल में ज्योत जगाना चाहिए ॥२॥

मुझे चरणों में - तेरे नैरूप मन को - मुझे चरणों में -

४ सातवाँ रूप कालरात्री माता - आठवाँ रूप महामोरी माता, इसके शीश को मुकाना चाहिए ॥२॥

मुझे चरणों में - तेरे नैरूप मन को - मुझे चरणों में -

५ नवौं रूप सिद्धात्री माता - "श्री बाबा श्री" आनन्द में जाता, सब को दिल में बिठाना चाहिए ॥२॥

मुझे चरणों में - तेरे नैरूप मन को - मुझे चरणों में -

तेरे नैरूप मन को माये मैं मुझे चरणों में ठिकाना चाहिए ॥२॥